

दीनदयाल जी ने राष्ट्र की एकता, अखंडता, मर्यादा और आन-बान को उजागर करता एक उपन्यास 'सम्राटचंद्रगुप्त' लिखा। इसकी भूमिका में उन्होंने कहा-

“यूरोपियन विद्वानों द्वारा प्रयत्नपूर्वक तथा उनका अंधानुकरण करने वाले भारतीय विद्वानों ने जो अंधकार फैलाया है, उसे नष्ट करने के लिए यह एक षोधपूर्ण कृति है।”